P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-9* ISSUE-4* December- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

समकालीन साहित्य में किन्नर जीवन

Shemale Life in Contemporary Literature

Paper Submission: 15/12/2021, Date of Acceptance: 23/12/2021, Date of Publication: 24/12/2021

शशिकान्त चंदेला
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग
शासकीय महाविद्यालय,
मेंहदवानी, डिण्डौरी,
म0प्र0, भारत

सारांश

समकालीन साहित्य में विविध विमर्शों की भांति अतिप्रासंगिक और ज्वलंत 'किन्नर' विमर्श पूरी चुनौती के साथ केन्द्र में है। जिसमें उनके जीवन के भूत, भविष्य और वर्तमान का गहराई से अंकन-आंकलन जारी है। किन्नरों के त्रासद जीवन की संवेदना बदलते वक्त के लिए जरूरी है ताकि भविष्य में स्वयं किन्नर समुदाय द्वारा अपने अधिकारों की लड़ाई व्यापक स्तर पर लड़ी जा सके। इतना ही नहीं समूचा मानव समाज उनके साथ, उनके पक्ष में खड़ा हो सके तभी इस अभिशप्त समुदाय को अपना अधिकार व सामाजिक स्वीकार्यता प्राप्त होगी। इस दिशा में आज समकालीन साहित्य, शासन-प्रशासन व जागरूक समाज तीव्र गति से कार्य को प्रारंभ कर चुका है। समकालीन साहित्य किन्नर जीवन का अस्तित्व और उनकी समाज में पहचान बनाने को निरंतर संघर्षशील है जो समूचा संसार और समस्त मानव समाज को बोध करा रहा है।

Like various discussions in contemporary literature, the most relevant and vivid 'Kinnar' discussion is in the center with full challenge. In which the in-depth evaluation of the past, future and present of his life continues. The sensitivity of the tragic life of eunuchs is necessary for the changing times so that in future the fight for their rights can be fought on a large scale by the eunuch community itself. Not only this, the entire human society can stand with them, on their side, then only this cursed community will get its rights and social acceptance. Contemporary literature, governance and conscious society have started work in this direction at a rapid pace. Contemporary literature is constantly struggling to establish the existence of transgender life and its identity in society, which is making sense to the whole world and the entire human society.

मुख्य शब्द : जीवन, समाज, समता, समानता, न्याय, संघर्ष
Keywords :Life, Society, Equality, Equality, Justice, Struggle

प्रस्तावना

मानव जन्म बहुत पावन और पवित्र है जिसे विभिन्न धर्मानुशासन में जीवनयापन करते हैं। उनके बीच थोड़ा-बहुत ऊंच-नीच या भेद-अभेद भी होता है हमारे लिए एकता और अखंडता के तत्व यदा-कदा मिल जाते हैं परंतु किन्नर समुदाय के साथ ऐसा बर्बरतापूर्ण रवैया तथा दोयम दर्जे का व्यवहार क्यों किया जाता रहा है? समकालीन साहित्य उसमें समताभाव लाने के लिए अनवरत संघर्षरत् है। किन्नरों के लिए मानव समाज द्वारा बनायी गई व्यवस्था ताप और त्रासदी ही है जो किसी भी स्थिति जीवन के अनुकूल नहीं है। उनका ताप और त्रासदपूर्ण जीवन को समकालीन साहित्य अपने अनुभव संसार का अहम हिस्सा बनाया है। इतना ही नहीं व्यवस्था की परत-दर-परत पोल भी खोल रहा है। किन्नर जीवन के अनुभवों को एक ऐसे रेशे से बुनती है जहां जीवन जीने के हुनर को सामान्य मानव समाज के साथ साझा करते हुए प्रतीत होती है। भूमण्डलीकरण के दौर में किन्नर जीवन की सुखद परिकल्पना की जा सकती हैं पर कब जब हम व हमारा पूरा समाज उनकी पूरी सच्चाई से रू-ब-रू होंगे। हमारा मानव समाज उनकी स्थितियों/परिस्थितियों का गहराई के साथ परीक्षण कर समाज के समक्ष प्रस्तुत करेगा तब।

अध्ययन का उददेश्य

1. किन्नरों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ना
2. समाज में उनकी पहचान बनाना
3. नारकीय जीवन से मुक्ति दिलाना
4. किन्नरों के अधिकार और हक के लिए लडाई लड़ना
5. उनके अस्तित्व और अस्मिता की पहचान कराना
6. देश व समाज के विकास में किन्नरों के योगदान को रेखांकित करना।

समकालीन साहित्य मानव जीवन के भूत, भविष्य और वर्तमान की आशाओं को प्रवाहित कर एक ऐसा मार्ग ढूंढ़ता है जिस पर चलने में सामान्य मानव को बहुत आसानी और आनंद का अनुभव होता है तथा जनमानस के प्रति संवेदनाओं सार्थक समाधान ढूंढ़ता है और मानव के बदलते हुए जीवनानुभवों को अभिव्यक्त करता है। हां, यह बात है कि मानव जीवन को किसी सिद्धांत या दर्शन की कसौटी में तो नहीं कसा जा सकता है परंतु मानव जीवन की परिवर्तंशीलता के कारण समाज परिवर्तित तो हो सकता है और यह परिवर्तन मानव समाज को नयी जीवन दृष्टि की तलाश में जुटा देती है। जिससे मानव समाज व मानव जीवन के मूलचरित्र को निरंतर बदलता हुआ अनुभव करता है। इस बदलते हुए जीवनानुरूपों व मूल्य दृष्टि का यथार्थ चित्रण मूल उत्स है। इस तरह अन्याय व अमानवीयता से जूझने की कोशिश मैथिलीशरणगुप्त की पक्तियों में देखा जा सकता है-

"न्याय धर्म के लिए लड़ो तुम
रितहित समझो बूझो
अनय राज, निर्दय समाज से ,
निर्भय होकर जूझो।"1

समकालीन साहित्य किन्नर जीवन के सुख-दुःख-दर्द, व्यथा-वेदना, संघर्ष, संत्रास और संवेदनाओं की सहज अभिव्यक्ति है। वह समाज से वहिष्कृत व तिरस्कृत किन्नर जन के जीवन की दुर्दांत कथा-व्यथा को पूरा सच्चाई के साथ उजागर करती है एवं अधिकारों के प्रति सचेष्ट करती है। ऐसी सहज अभिव्यक्ति समकालीन साहित्य में देखिए-

"अबला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।"[2]

समाज से बहिष्कृत किन्नर समुदाय नपुंसक नहीं बल्कि बीरता और बलशाली का परिचायक है। इसका अच्छा उदाहरण रामायण-महाभारत जैसे महाकाव्यों में देखने को मिलता है। जैसे, राम की सैन्य शक्ति यथा - वानरसेना के साथ कोल, किरात, किन्नर और भील तथा महाभारत में अर्जुन देवलोक में उर्वशी के श्राप से नपुंसक रूप धारण कर नया इतिहास कायम करते हैं। रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदासजी ने राम के शील, शक्ति और सौन्दर्य को जन-जन के समक्ष रखते हुए कहे कि किन्नर राम भक्त होकर सभी तरह से सहयोग किया। कुछ पंक्तियां दृष्टव्य है-

"पुरूष नपुंसकनारि चा, जीव चराचर कोई
सर्वभावनाजकपटतजि, मोहि परमप्रिय सोई।"[3]

दृष्टांत ऐसा भी आता है कि- "किन्नर महादेव के भक्त है, किन्नर शिव के सबसे बडे गायक है।"4 जो समन्वय की विराट् चेष्टा का परिचायक है।

किन्नर जीवन को बराबरी की हिस्सेदारी तथा विशिष्ट सम्मान दिलाने में आज समकालीन साहित्य प्रयासरत् है। इस समाज को सनातन काल में बड़े-बड़े ओहदों के साथ जीवन जीने का पूरा अधिकार था। यहां तक कि मुगलकालीन साम्राज्य व्यवस्था में भी सलाहकार, प्रशासक और हरम के रक्षक जैसे दायित्वों पर इनकी तैनाती होती थी। जिससे वे सम्मान के साथ जीवनयापन करते थे। लेकिन बाद में उनका जीवन अस्त-व्यस्त हो गया तथा नारकीय जीवन जीने को मजबूर हो गये। आज तो समाज ने उन्हें अलग-थलग कर दिया है परंतु समकालीन साहित्य और प्रशासन ने इन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का बीड़ा उठाया है। यह सच है कि जब भी समाज, साहित्य, राष्ट्र या सृष्टि पर कोई ऐसी स्थिति निर्मित होती है तो केवल साहित्य ही एक ऐसा माध्यम बचता है जो उपेक्षित समाज या नारकीय जीवन जीने वाले मजबूर समाज का कवच बनता है। समकालीन साहित्य का यही वैशिष्ट्य है जैसे बाबा तुलसी कह गए-

" सुर किन्नर नर नाग मुनीसा।"[5]

चन्द्रकांत देवताले भी नया मार्ग प्रशस्त कराते हुए कहते हैं-

"सचतो यह है
मैं रास्ता ढूँढ रहा हूं
कोई फैसला नहीं लिख रहा हू
शर्मिंदगी में डूबा पस्त आदमी हूं
थकी हुई घायल धरती को
सूंघ रहा हूं।"6

वास्तव में किन्नरों का जीवन सामान्य मनुष्यों से सर्वथा भिन्न है। यह समुदाय साहित्य व समाज की मुख्यधारा में अपनी पहचान बनाने में अभी तक असमर्थ रहा है। वे अपने जीवन काल में अनेकानेक विसंगतियों का सामना करते हैं। उनकी इन विसंगतियों को समकालीन साहित्य के माध्यम से समाज के सम्मुख प्रस्तुत कर समाधान का मार्ग ढूंढता है। किन्नर समाज के प्रत्येक व्यक्ति के मन में बार-बार यह सवाल उठता है कि उसके जन्म लेने में उसका क्या दोष है और समाज उसे ही इसका दंड क्यों देता है? जिसका समाज के पास कोई सार्थक उत्तर नहीं है। बस, इसीलिए समकालीन साहित्य नये मार्ग का अन्वेशी बन सम्मुख आया है। जितेन्द्रनाथ पाठक की काव्याभिव्यक्ति देखिए-

"आदमी यदि आदमी है
तो उसका रक्त एक है
इसलिए मेरे होने में
तुम भी कहीं होगे
और मेरे खत्म होने में
तुम भी कहीं से खत्म होगे।"[7]

कवि और कविता का यह आंकलन वर्तमान साहित्य गहरे से अंकित है। समकालीन साहित्य का प्रमुख उद्देश्य भी यही है कि किन्नर समुदाय आम आदमी की तरह जीवन जिये। किन्नर जीवन की ऐसी स्थिति यथार्थ अंकन कर शक्ति और चेतना का संचार करती पंक्तिया प्रस्तुत हैं-

"यह धरा आकाश, चाहे हों, न हों,
अस्तित्व मेरा है अमिट है में मरुंगा ही नहीं।"[8]

किन्नर जीवन की ऐसी विकट और दारूण सच्चाइयों को जन-मन के अंतरंग व कोने-कोने तक पहुंचा कर जीवन-प्रकाश से भर देने की चाहत समकालीन साहित्य में प्रतिभाषित होती है। बानगी स्वरूप चंद्रकांत देवताले की काव्याभिव्यक्ति का पुट-

"कहां है हमारा गाढा खून
हमारा पैतृक मस्तक
स्वाभिमान से दमकता हुआ
पसीने को पीता
आदमी का लोहा यहाँ।"[9]

इस तरह समकालीन कवि किन्नर समुदाय के अस्तित्व को, अपनेपन की टीस को उस गाढ़े खून के रिश्ते के माध्यम से खोजने की कोशिश कर सका है। इसीलिए किन्नर जीवन की वास्तविक संरचना को आम मानव के साथ जोडकर देखा जा रहा है। साथ ही समयानुकूल नए मूल्यों के सृजन कर उनकी परंपरा को मूल्यांकित करती है। उनके जीवन की विसंगतियों को दूर कर समाज की मुख्यधारा से जोडने का प्रयास जारी है।

समाज की बेरुखी कहें या समय की भयावहता ने किन्नर समुदाय को कोनों-कातरों में नारकीय जीवन जीने को मजबूर कर दिया है। जिनके दुःख-दर्द और वेदना-संवेदना को समकालीन साहित्य दूर करने की भरपूर कोशिश कर रही है। किन्नर जीवन की अंतःवेदना का बयान करती निम्न पंक्तियां देखिए-

"एक अद्रश्य इमारत
मेरे ऊपर गिर रही है
जो नहीं है उसकी धार में
मैं बह रहाहूँ।"[10]

इतना ही नही अंधेरा-ही-अंधेरा से त्रस्त किन्नर जीवन का जायजा लेती हुए कवि की सरल किन्तु गंभीर अर्थ लिए कविता की कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं-

"अब मैं किस
अंधेरे का वर्णन करूँ,
जो उसके बाहर है
या जो उसके भीतर है।'[11]

आधुनिक युग में किन्नर समुदाय को हेय-दृष्टि और घृणित भाव से देखा जा रहा है जबकि पहले अपराजेय जातियों में गण्य थीं। महाभारत की शिखंडी और वृहन्ल्ला को ही लें तो वे बल-बुद्धि और शक्ति-शौर्य के विशिष्ट द्योतक हैं। तभी तो महाभारत में भीष्म पितामह ने स्वयं कहा था कि-" मुझे शिखंडी ही हरा सकती है।" [12]

किन्नर समाज की वास्तविकता का यथार्थ चित्रण 'जंगल का दर्द' काव्य-संग्रह में देखा जा सकता है। जहाँ किन्नर समाज का साधारण जन के करीब जाने की दृष्टि विकसित होती है-

"तुम धूल हो
पैरों से रौंदी हुई धूल
बेचैन हवा के साथ उठो
आंधी बन
उनकी आंखों में पड़ों
जिनके पैरों के नीचे हो।"[13]

जबकि वह तो नारकीय जीवन से मुक्त होकर सामान्य जन की तरह जीवन जीने की चाहत रखता है। इसी मुक्ति कामना को लिए समकालीन साहित्यकार अपने अंतःसंवेदी मानस में पूरी सच्चाई के साथ अभिव्यक्ति देता है, जैसे-

"अब शामिल कर लो मेरी आंखों को
अपने देखने
सचमुच बहुत सुदर हो गई है यह शाम
यही अधूरी छोड़कर अपनी बात
सूर्यास्त की चिंनगारियों में
हम देख लें अंकित आतिशबाजी।"[14]

किन्नरों के प्रति ऐसी सकारात्मक सोच लिए दृष्टि परिवर्तन का आकांक्षी समकालीन साहित्यकार नये मूल्यों को उपस्थित करता है। इस संदर्भ में अज्ञेय जी नैतिकतापूर्ण दृष्टि को उद्धृत करना समीचीन होगा। वे कहते हैं कि-"आचरण का मान बदलने पर भी नीति की आवश्यकता नहीं मिटती, निरी अवसरवादिता सांस्कृतिक आदर्श नहीं, फिर वह चाहे किसी भी वर्ग की क्यों न हो।"[15]

साहित्यावलोकन

1. डागा, शीला 2020 ने अपनी पुस्तक किन्नर गाथा में किन्नर जीवन को साहित्य और समाज की मुख्यधारा से जोडने का सार्थक प्रयास है
2. सिन्हा, डॉ शोभा 2010 ने प्रस्तुत पुस्तक में किन्नर जीवन के प्रति नई चेतना दृष्टि को विकसित करती है।
3. देवतालेे, चन्दंकांत 2003 ने प्रस्तुत पुस्तक में अध्ययन की परिकल्पना से किन्नर जीवन के नए मूल्यों को चिन्हित कर टूटती-बिखरती संवेदनाओं के बीच जीवन जीने की नई उम्मीद जगाते है।
4. देवताले, चन्द्रकांत 1987 द्वारा प्रस्तुत साहित्य किन्नर जीवन की वास्तविक समस्याओं को उदघाटित करती है तथा किन्नर जीवन के नैतिक मूल्यों के प्रति सजग भी करती है।
5. गुप्ता, ओमप्रकाश 1999 ने अपनी चिंतन द्रष्टि के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं कि आज किन्नर जीवन, उनका अस्तित्व और अस्मिता खतरे में है। जिन्हें बचाने का एक प्रयास है समकालीन साहित्य। प्रयास यह भी है कि कुत्सित समाजिक मानसिकता से मुक्ति मिल पायेगी एवं नारकीय जीवन की जगह मनुष्यता जीवन जी पायेंगे।
6. ठाकुर, नरेन्द्र सिंह 1996 एवं देवताले, चन्द्रकांत 2010 द्वारा प्रस्तुत पुस्तक किन्नर जीवन की स्थिति-परिस्थिति को प्रतिबिंबित करती है जो समकालीन साहित्य का आदर्श रूप है।

अतः समकालीन साहित्य का लक्ष्य आमजन जीवन के साथ साथ किन्नर जीवन की स्थिति परिस्थिति को रेखांकित करना है जिससे समाज की मुख्य धारा में आकर मनुष्यता जीवन जी सकें। ऐसा इसीलिये क्योंकि साहित्य में ही जीवन की सार्थकता सन्निहित है। जब भी नैतिक मूल्यों में गिरावट-सी महसूस होती है तो समकालीन साहित्य ही उसे सुदृढ व पुष्ट करती है।

निष्कर्ष

अंततः कहा जा सकता है कि समकालीन साहित्य किन्नर जीवन में अक्षय ऊर्जा और नई चेतना दृष्टि को विकसित करने के लिए नई जमीन तलाश रहे हैं। इतना ही नहीं किन्नरों के मौजूदा हालात तथा समाजिक व्यवस्था पर भी चिंतन कर रहे हैं। फलस्वरूप किन्नरों की टूटती संवेदनाओं के बीच जीवन जीने की नई उम्मीदों तलाश रहे हैं। इसी किन्नर समुदाय के प्रति लोगों की सोच में बदलाव आया है तथा व्यक्ति व समाज की मानसिकता में बदलाव आया है। यूं कहें कि किन्नर जीवन की नयी अवधारणा भी विकसित हुई है।
इस तरह समकालीन साहित्य ने किन्नर जीवन के बदलते आयामों को पहचानकर उनके जीवन मूल्यों की पुरजोर पैरवी की है। जिससे भविष्य में किन्नर जीवन की स्थिति में बुनियादी सुधार आयेगा एवं आदमी की तरह जीवन जी सकेगा। इसी उम्मीद को व्यक्त करती कवि दिनकर की पंक्तियां-

पहली सीख यही जीवन की
अपने को आबाद करों
बस न सके दिल की बस्ती तो
आग लगा बर्बाद करों
खिल पाये तो कुसुम खिलाओं
नहीं करों पतझाड इसे
या तो बांधों हृदय फूल से
या कि इसे आजाद करो।"[16]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *डॉ शोभा सिन्हा : समकालीन हिंदी कविता में सामान्य जन,प्रज्ञा प्रकाशन 24, जगदीशपुरम लखनउ मार्ग, निकट त्रिपुला चौराहा,रायबरेली-229316, उत्तरप्रदेश, पेज -41, प्रथम संस्करणः 2010*
2. *वही, पेज-40*
3. *ऑनलाइन गूगल के माध्यम से*
4. *ऑनलाइन गूगल के माध्यम से*
5. *गोस्वामी तुलसीदास ' रामचरितमानस, खेमराज श्रीक्रष्णदास अध्यक्ष ः श्री वेंकदेश्वर प्रेस, खेमराज श्रीक्रष्णदास मार्ग,मुम्बई-400004,पेज- , प्रथम संस्करणः*
6. *चन्द्रकांत देवतालेः उजाड में संग्रहालय, राजकमल प्रकाशन प्राईवेट लिमिटेड 1-बी नेताजी सुभाष मार्ग नई- दिल्ली-110002 पेज-124, प्रथम संस्करणः 2003*
7. *डॉ शोभा सिन्हाः समकालीन हिंदी कविता में सामान्य जन, प्रज्ञा प्रकाशन 24, जगदीशपुरम, लखनउ मार्ग, निकटतिपुला चौराहा, रायबरेली-229316, उत्तरप्रदेश, पेज- 77, प्रथम संस्करणः 2010*
8. *डॉ ओमप्रकाश गुप्ताः आधुनिक साहित्य, चिंतन के विविध आयाम, पार्श्व प्रकाशन निशापोल, झवेरीबाड, रिलीफ रोड, अहमदाबाद-380001, पेज-81, प्रथम संस्करणः 1999*
9. *चन्द्रकांत देवतालेः आग हर चीज मं बतायी गयी थी, राजकमल प्रकाशन प्राईवेटि लिमिटेड, 1-बी नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली-110002, पेज-105, प्रथम संस्करणः 1987*
10. *नरेन्द्र सिंह ठाकुरः सर्वेश्वर दयाल सक्सैना और उनका काव्य, सत्येन्द्र प्रकाशन 30, पुराना अल्लाारपुर, इलाहाबाद-211006, पेज-31, प्रथम संस्करणः 1996*
11. *वही, पेज-11*
12. *आनलाईन गूगल के माध्यम से*

13. *नरेन्द्र सिंह ठाकुरः सर्वेश्वर दयाल सक्सैना और उनका काव्य, सत्येन्द्र प्रकाशन 30, पुराना अल्लारपुर, इलाहाबाद-211006, पेज-13, प्रथम संस्करणः 1996*
14. *चन्द्रकांत देवतालेः पत्थर फैंक रहा हूँ, वाणीप्रकाश, 4695, 21-ए, दरियागंज नयी दिल्ली-110002, पेज-66-67, प्रथम संस्करणः 2010*
15. *डॉ प्रेम सिंहः अज्ञेयि चिंतन और साहित्य, साहित्य सहकर ई-10/4 क़ष्णनगर, दिल्ली-110051, पेज-80, प्रथम संस्करणः 1995*
16. *त्रिलोचनः काव्य और अर्थ-बोध, साहित्यवाणी 28, पुराना अल्लारपुर इलाहाबाद-211006, पेज-137 , प्रथम संस्करणः 1995*
17. *डागा, शीला : किन्नर गााथा, वाणी प्रकाशन 4695, 21-ए, दरियागंज नयी दिल्ली 110002, प्रथम संस्करण :2020*